मई २०१४

कीमत ₹ १२/-

दादा भगवान परिवार का

अक्रम एक्सप्रेस

छुट्टियों का मज़ा

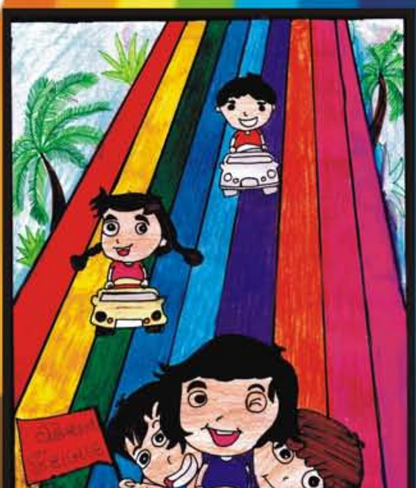

कवर पेज प्रतियोगिता के विजेता

संपादकीय

बालमित्रों,

हँसते-खेलते सीखने का मज़ा ही कुछ और होता है। बातें हृदय में उतरती जाएँ और पता भी न चले इस तरह अपने में बदलाव होता जाता है। न कोई बोझ लगता है, न ही बोरियत होती है। बल्कि सही समझ प्राप्त होने के बाद आनंद का अनुभव होता है।

यह अंक भी सरलता सहित बहुत सारी छुपी प्रेरणाएँ दे रहा है। आपको ज़रूर अच्छा लगेगा। पढ़ोगे न...

-डिम्पल महेता

अनुक्रमणिका

मीठी यादें २
यह तो नई ही बात! ४
पश्चाताप के आँसू ६
दादाजी कहते हैं... ८
अभिप्राय से दूर ही अच्छे ९
बुद्धि कॉर्नर १३
चलो खेलें १४
ऐतिहासिक गौरवगाथा १६
जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि १८
पज़ल के जवाब १९

छुट्टियों का मज़ा अक्रम एक्सप्रेस

संपादक :
डिम्पल महेता
वर्ष : २ अंक : २
अखंड क्रमांक : १४
मई २०१४

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला. गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj-382421.
Dist-Gandhinagar.

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :१२५ रुपये
यु.एस.ए. :१५ डॉलर
यु.के. :१० पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ५०० रुपये
यु.एस.ए. : ६० डॉलर
यु.के. : ४० पाउन्ड
D.D/ M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

मीठी यादें

दादाश्री के देहांत के बाद पूज्य नीरू माँ, दादाजी का अक्रम विज्ञान लोगों तक पहुँचाने के लिए शहरों में तो जाती ही थीं लेकिन गाँवों में भी जाती थीं। नीरू माँ के अंदर ऐसा बहुत चलता रहता था कि जहाँ-जहाँ लोग दादा को नहीं पहचानते, वहाँ दादा का विज्ञान पहुँचाना है। इस तरह नीरू माँ ने सबसे पहले शुरूआत गाँवों से ही की।

उस समय कोई गाड़ी नहीं थी। इसलिए वे गाँव-गाँव छकड़े, जीप और बैल गाड़ी तक में बैठकर भी जाती थीं। छकड़े और जीप में तो कितने लोगों को ठसाठस भरकर बिठाते हैं। गर्मी के मौसम में भी तपती गर्मी में नीरू माँ ऐसे छकड़े में बैठकर जाती थी। उनके लिए तो एरकंडिशन गाड़ी और छकड़े में कोई फर्क नहीं था। बस, दादा का ज्ञान पहुँचाने निकल ही जाती थीं। उसमें उन्होंने न तो सर्दी-गर्मी देखी और न ही देखी सुख-सुविधा। फिर भी जब देखो तब नीरू माँ आनंद में ही थीं।

एक बार नीरू माँ एक छोटे से गाँव में गई। पहले के जमाने में तो ऐसे छोटे गाँवों में घर में बाथरूम या टॉईलेट की सुविधा नहीं होती थी। बाहर बड़ा सा हॉल और अंदर छोटा सा रूम होता था। उस छोटे से रूम में ही एक कौने में नहाना-धोना और वह भी न हों तो वहाँ के लोग तो कुएँ के पास या कहीं भी नहा लेते थे। नीरू माँ पहली बार वहाँ गई थीं। एक ब्रह्मचारी बहन उनके साथ थीं। नीरू माँ को जब नहाना था तब सभी रूम में से बाहर निकल गए। नीरू माँ के नहाने के बाद जब ब्रह्मचारी बहन अंदर गई तब नीरू माँ ने उनसे कहा, "यह तो कितना बड़ा रूम के बराबर बाथरूम है। क्या बम्बई में इतने बड़े बाथरूम होते हैं? देखो यहाँ मज़े ही हैं न।"

टॉईलेट जाना हो तो, बाहर खुले में जाना पड़ता था। दो-तीन लोग साथ में जाते थे। वहाँ नीरू माँ कहतीं कि देखो कितनी विशाल जगह है। अपने यहाँ तो छोटे से टॉईलेट होते हैं।

देखा मित्रों, ज्ञानी को कहीं पर भी पसंद-नापसंद जैसा होता ही नहीं। वे सभी जगह एडजस्टमेन्ट लेकर पॉज़िटिव ही रहते हैं।

यह तो

प्रत्येक टकराव में हमेशा दोनों को नुकसान ही होता है। सामनेवाले को दु:ख पहुँचाते ही, उसी क्षण आपको भी दु:ख पहुँचे बगैर नहीं रहता! रोड ट्रैफिक का धर्म क्या है कि "टकराओगे तो आप मर जाओगे, टकराने में जोखिम है। इसलिए किसी के साथ टकराना नहीं।" इसी प्रकार व्यवहारिक कार्यों में भी टकराना नहीं। टकराव टालो!
जिसे पाप करने में डर लगता है, वह बड़ा ज्ञान कहलाता है।
भगवान किस पर खुश रहते हैं? जो सभी के दु:ख ले ले और सामनेवाले को सुख दे उससे।

नई ही बात !

इस दुनिया में सबसे बड़ा पुण्यशाली कौन... जिस पर कुसंग का असर न हो।
एक बार झगड़ा करना, पाँच हज़ार रुपये के नुकसान के बराबर है।
सुख उसे कहेंगे कि जिसके आने के बाद दुःख न आए। जैसे कि आइस्क्रीम खाने में सुख महसूस होता है लेकिन यदि एक साथ पचास आइस्क्रीम खिला दें तो... वही सुख दुःख में बदल जाएगा।

पश्चाताप के आँसू

कम्प्यूटर ऑन करके एकता अपने ई-मेल चेक कर रही थी, तभी उसे दूसरे रूम में से रोने की आवाज़ सुनाई दी। रूम के अंदर नज़र डाली तो टेबल पर सिर रखकर मीरा धीमी आवाज़ में रो रही थी। एकता, मीरा के पास जाकर बैठ गई। उसके सिर पर हाथ रखकर प्रेम से पूछा, "क्या हुआ बेटा? क्यों रो रही है?"

अचानक मम्मी को अपने पास बैठा हुआ देखकर, मीरा ने फटाफट आँसू पोंछ लिए और कहा, "कुछ नहीं मम्मी, कुछ नहीं हुआ है।"

एकता, मीरा के आँसू पोंछते हुए बोली, "अरे इतना रोई है और कह रही है कुछ नहीं हुआ है। बेटा मम्मी से कहने में क्या झिझक? स्कूल में किसी ने कुछ कहा?"

स्कूल का नाम सुनकर मीरा का गला भर आया। उसे फिर सबकुछ याद आ गया और वह रोने लगी। मम्मी ने मीरा को पानी दिया। पानी पीकर मीरा ने कहा, "मम्मी, मुझे स्कूल नहीं जाना है, मुझे स्कूल में अच्छा नहीं लगता, स्कूल में मेरी कोई फ्रेन्ड नहीं है। रिसेस में भी मैं रोज़ अकेले ही लंच लेती हूँ। सभी लड़कियाँ मेरा बहुत मज़ाक उड़ाती हैं और वे सब एक होकर मुझे अकेला छोड़ देती हैं। प्लीज़ मम्मी, मुझे स्कूल नहीं जाना।"

"बेटा, स्कूल में तो हम पढ़ाई करने जाते हैं और तुम पढ़ाई में तो इतनी होशियार हो। फ्रेन्ड्स तो बन जाएँगी। कल टीचर के साथ पेरेन्टस मीटिंग है। उसमें मैं तुम्हारी क्लास टीचर से बात करूँगी।" एकता, मीरा को समझा रही थी, तभी डोर बेल बजी। पड़ोस में से नियति, मीरा को अपने घर ले जाने के लिए आई थी।

मीरा के जाने के बाद एकता फिर से कम्प्यूटर के आगे जाकर बैठ गई। मीरा की बात सुनकर उसका दिल बहुत भारी हो गया था। आँखें बंद की तो भूतकाल की यादें उसकी आँखों के सामने ताज़ा हो गई...

नौवीं क्लास में उसका पहला दिन....

एकता ने आस पास नज़र घुमाई तो देखा कि सभी बच्चे अच्छे-अच्छे कपड़े पहने हुए हैं। सिवाय एक लड़की के, उसे देखकर एकता को मन में लगा, "यह कैसे विचित्र कपड़े पहनकर आई है। बिल्कुल भी ड्रेसिंग सेन्स नहीं है।"

टीचर ने अटेन्डेन्स लेना शुरू किया। "धारा शाह" टीचर ने पूछा।

क्लास में खामोशी छा गई...

"धारा शाह है?" टीचर ने फिर से पूछा।

एक धीमी सी आवाज़ आई और साथ ही साथ कुछ फटने की आवाज़ भी आई।

"डरपोक धारा का शर्ट फटा" एक लड़के ने ज़ोर से कमेन्ट किया। तभी दूसरी लड़की बोली, "सौ साल पुराना शर्ट होगा।" धारा का मज़ाक उड़ाकर उसे ऐसा लग रहा था जैसे उसकी हिम्मत बढ़ गई है।

उस पूरे साल मानो धारा क्लास की जोकर बन गई थी। किसी के पास कोई बात न हो तो सभी धारा का मज़ाक उड़ाने लगते थे। एक दिन एक गेम में हारने से एकता को ऐसी सज़ा मिली कि "उसे दो घंटे के लिए धारा को अपने घर बुलाना होगा।"

"दो घंटे धारा शाह के साथ बिताना। ओह नो" एकता एकदम अपसेट हो गई।

दूसरे दिन एकता, धारा के पास गई और कहा, "इस शुक्रवार को दो घंटे के लिए मेरे घर पर आओगी?"

यह सुनकर धारा एकदम खुश हो गई। लेकिन धारा का खुश चेहरा एकता देख न सकी क्योंकि उसकी फ्रेन्ड उसे देखकर हँस रही थी। यह देखकर धारा रोने लगी।

“अरे, इसमें रोने की क्या बात है? मैं तो तुझे अपने घर बुला रही हूँ।” एकता ने कड़ी आवाज़ में कहा।

“सचमुच?” डरी हुई और धीमी आवाज़ में धारा बोली और रोते-रोते वहाँ से चली गई।

नौवीं क्लास के बाद धारा गायब हो गई। किसी को नहीं पता कि कहाँ गई। शायद किसी दूसरी स्कूल में दाखिल हो गई होगी।

...एकता की आँखों में से टप-टप आँसू गिरने लगे। आज अपनी बेटी पर जब बीता, तब उसे वास्तव में धारा का दर्द समझ में आया। वैसे तो उसे कई बार उसके किए पर पश्चाताप हुआ था। पर आज तो उसने हृदय से खूब पश्चाताप करके धारा से माफी माँगी। स्कूल के दिनों में धारा को नीचा दिखाकर उसे ऐसा महसूस होता था कि खुद बड़ी है। पर आज उसे समझ में आया कि किसी का स्वमान तोड़कर अपने अहम् का पोषण करना कितनी बड़ी हीनता है। “हे भगवान, मुझे माफ कर दीजिए। अब मैं कभी भी ऐसा नहीं करूँगी।” इतना कहकर एकता की आँखें भीग गई।

दूसरे दिन मीटिंग में एकता, मीरा की क्लास टीचर से मिलने गई। टीचर सिर झुकाकर कुछ पढ़ रही थीं। एकता के पैर की आवाज़ से टीचर ने चश्मा उतारकर सिर ऊँचा किया।

“धारा!!!” एकता एकदम अचम्भे से बोली, “आई मीन, मिस धारा, आप मीरा की क्लास टीचर हो?”

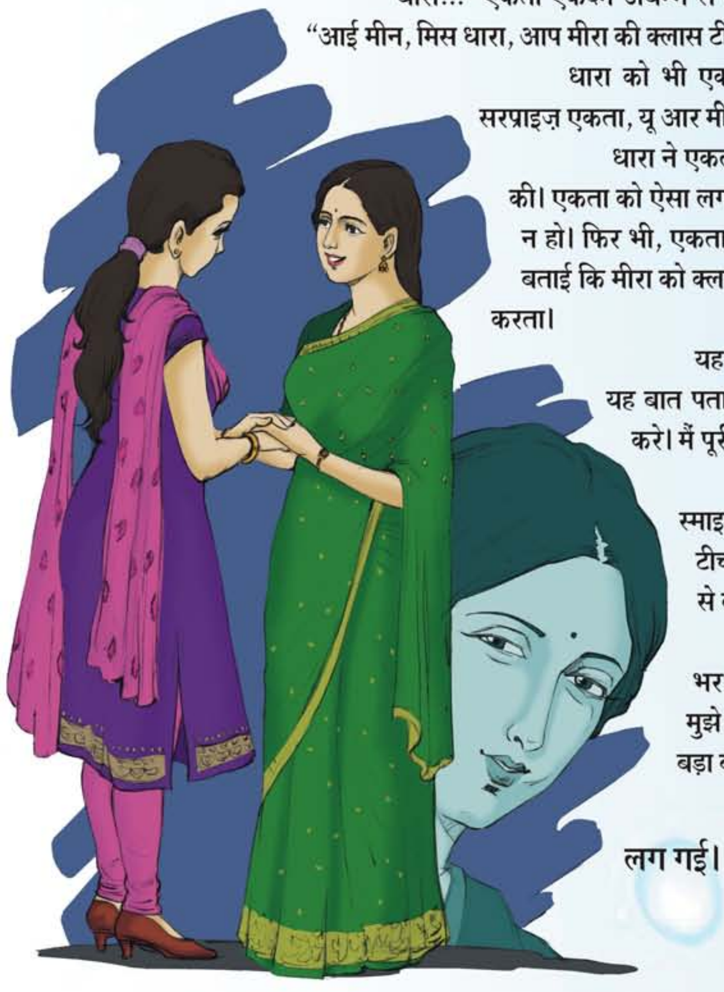

धारा को भी एकता को देखकर बहुत आश्चर्य हुआ, “वॉट ए प्लेज़ेन्ट सरप्राइज़ एकता, यू आर मीरा’स मॉम?”

धारा ने एकता के साथ बहुत अच्छी तरह मीरा के प्रोग्रेस की सारी बातें की। एकता को ऐसा लगा कि जैसे धारा के मन पर बीते हुए दिनों की कोई छाप ही न हो। फिर भी, एकता ने हिम्मत करके धारा से माफी माँगी। और यह बात भी बताई कि मीरा को क्लास की लड़कियाँ चिढ़ाती हैं, उसके साथ कोई लंच भी नहीं करता।

यह सुनकर एकता को भरोसा दिलाते हुए धारा बोली, “मुझे यह बात पता नहीं थी। मैं ध्यान रखूँगी कि मीरा को कोई परेशान न करे। मैं पूरी सावधानी रखूँगी कि मेरे क्लास में हेल्दी वातावरण रहे।”

और फिर एकता के कंधे पर हाथ रखकर चेहरे पर स्माइल के साथ धारा ने कहा, “आज से मैं मीरा की क्लास टीचर के साथ फ्रेन्ड भी बन जाऊँगी। उसके साथ तुम्हारे हाथ से बना हुआ टेस्टी लंच भी करूँगी।”

यह सुनकर एकता की आँखें छलक गई। गला भर आया। आँसू पोंछते हुए वह बोली, “थैन्क यू धारा, तुमने मुझे माफ कर दिया। आज मेरे हृदय पर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया।”

और दोनों एक दूसरे से गले लग गई।

दादाजी कहते हैं...

बैर खत्म हो जाए और आनंद भी रहे!

दादाश्री : जब इस दुनिया में किसी भी जीव को किंचितमात्र भी दु:ख नहीं देने की भावना रहने लगेगी, तब कमाई होगी। ऐसी भावना रोज़ सुबह करनी चाहिए। यदि कोई गाली दे और वह हमें अच्छी न लगे तो उसे जमा कर लेना चाहिए, पता लगाने नहीं जाना चाहिए कि मैंने कब उसे गाली दी थी? हमें तो तुरंत ही जमा कर लेना चाहिए कि हिसाब पूरा हुआ और यदि चार गालियाँ वापस दे दोगे तो बहीखाता चालू रहेगा, इसीको ऋणानुबंध कहते हैं। बहीखाता बंद किया कि खाता बंद। ये लोग तो क्या करते हैं कि किसीने अगर एक गाली दी हो तो उसके बदले चार गालियाँ देते हैं! भगवान ने क्या कहा है कि जो रकम तुम्हें अच्छी लगती हो, वही उधार देना और जो अच्छी नहीं लगती हो, तो नहीं।

कोई आदमी कहे कि "आप बहुत अच्छे हैं," तो हमें भी कहना चाहिए कि, "भई, आप भी बहुत अच्छे हो।" ऐसी अच्छी लगनेवाली बातें करोगे तो चलेगा।

यह पूरा संसार हिसाब चुकाने का कारखाना है। बैर बाँधोगे तो किसी भी तरह चुकाना ही पड़ेगा, ऐसी है यह दुनिया। अनंत अवतार बैर में और बैर में ही बीत गए। यह दुनिया बैर से ही खड़ी है। घर के लोगों के साथ बैर नहीं बाँधना चाहिए। जिनके साथ रहना है, वहाँ झगड़ा करेंगे तो कैसे चलेगा? जीवन जीने की कला क्या है कि संसार में बैर न बंधे और छूट सकें इसलिए घर में सभी के साथ, आस पास, ऑफिस में सबके साथ "समभाव से निकाल"(किसी को दु:ख न हो इस तरह) करना चाहिए।

घर में जब कभी अनचाहा खाना थाली में आए तब "समभाव से निकाल" कर लेना। किसी को परेशान मत करना। यह खाने की चीज़ तुम्हें दी, उसकी तुमने बुराई की तो सबसे पहले इससे सुख कम होगा या बढ़ेगा?

प्रश्नकर्ता : कम होगा।

दादाश्री : तो जिससे सुख कम हो, ऐसा व्यापार ही नहीं करना चाहिए? मुझे तो, कई बार मेरी पसंद की सब्ज़ी नहीं होती, फिर भी वह खा लेता हूँ और ऊपर से कहता हूँ "आज की सब्ज़ी बहुत अच्छी है।"

प्रश्नकर्ता : पसंद नहीं हो और हम कहें कि पसंद है तो वह मन को मनाना नहीं हुआ?

दादाश्री : बेकार ही मन को नहीं मनाना है। "पसंद है", ऐसा कहेंगे तो एक तो गले से उतरेगा। "पसंद नहीं है" कहा तो सब्ज़ी को भी गुस्सा आएगा और बनानेवाला भी खीज जाएगा। घर में भी कभी कोई नहीं जान पाता कि दादा को यह पसंद नहीं है और यह पसंद है। खाना बनाना क्या बनानेवाले के हाथ की बात है? वह तो खानेवाले के व्यवस्थित के हिसाब से थाली में आता है, उसमें दखल नहीं करनी चाहिए।

१६

तुम्हारी छोटी सी स्टोरी बुक किस तरह बनाओगे?

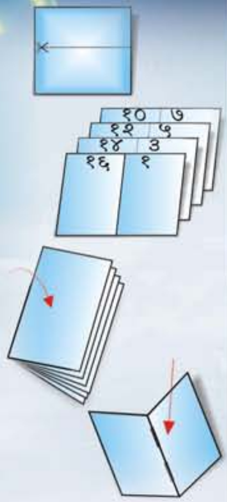

१. पिन का पेज निकाल लो, जहाँ कैंची दिखाई है, उस लाइन पर कैंची से कागज़ काटो।

२. बाद में बताए अनुसार पेज नं. देखकर एक के नीचे एक लगाओ।

३. लगाने के बाद पेज को बीच में से मोड़कर, वहाँ स्टैपलर पिन लगा दो।

आपकी पॉकिट स्टोरी बुक तैयार!

१

अभिप्राय से दूर ही अच्छे !

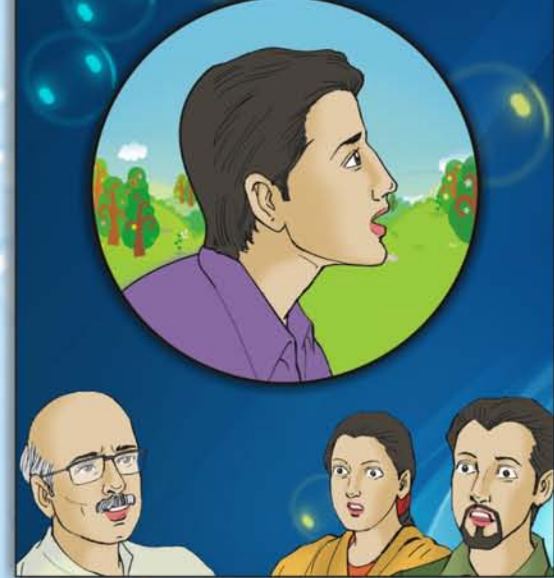

१४

३

ट्रेन चलते ही पुत्र के चेहरे पर आनंद की रेखा छा गई। वह खिड़की के बाहर टुकुर-टुकुर देखने लगा।

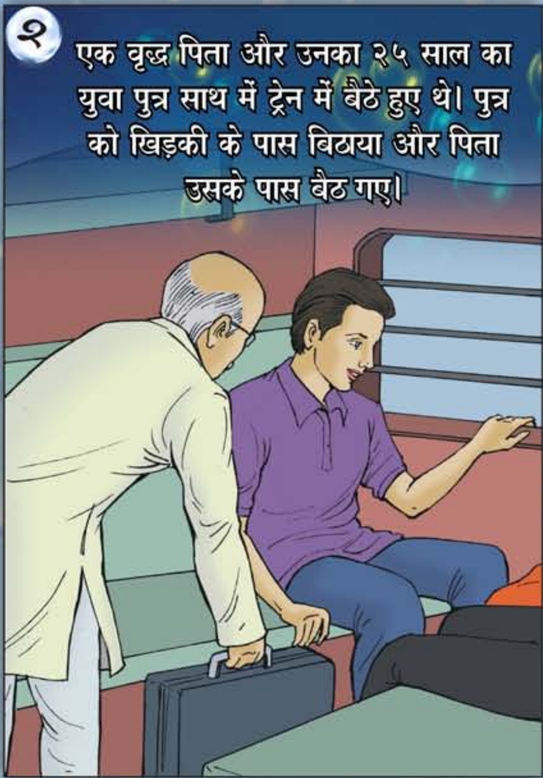

१५

बोध

हकीकत जाने बिना
किसी के लिए अभिप्राय
नहीं बनाने चाहिए।

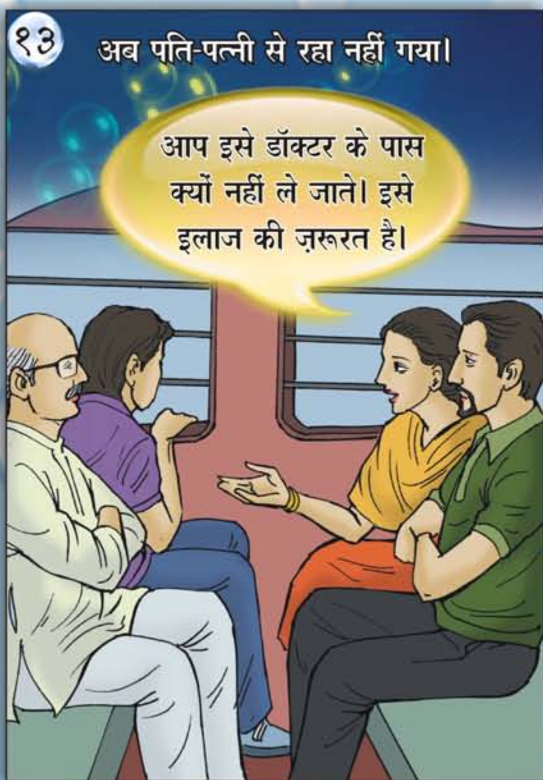

१२
पापा, देखो बरसात आ रही है, पानी मुझे छू रहा है।

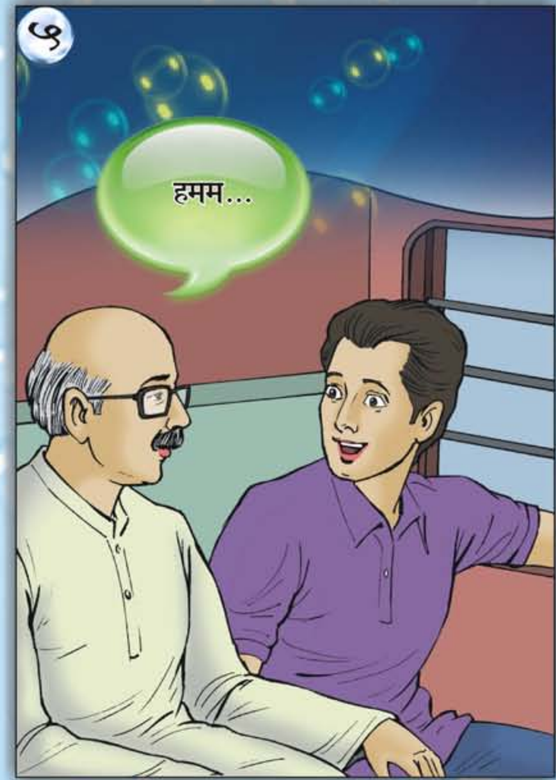
९
हमम...

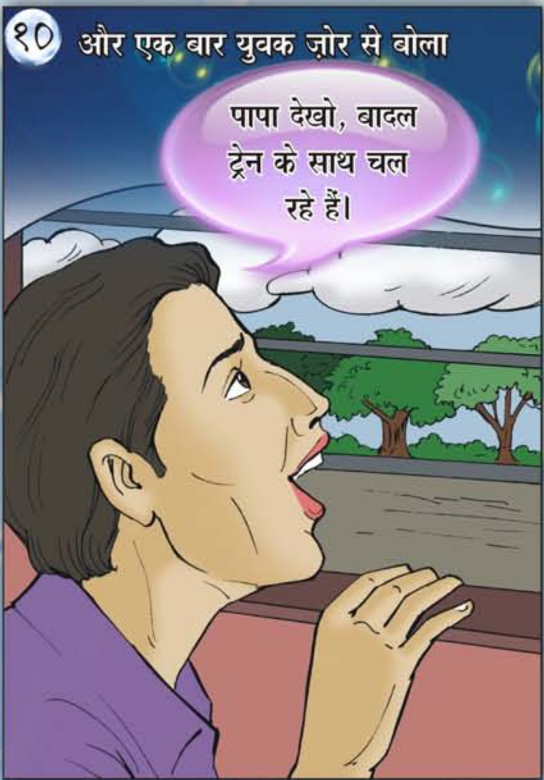
१० और एक बार युवक ज़ोर से बोला
पापा देखो, बादल ट्रेन के साथ चल रहे हैं।

७
इतना बड़ा होकर भी कैसे बच्चों जैसा बरताव कर रहा है।

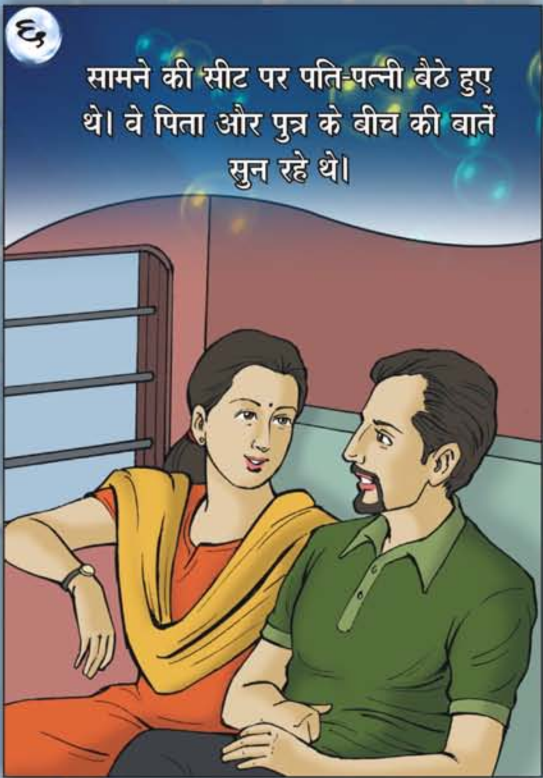
६
सामने की सीट पर पति-पत्नी बैठे हुए थे। वे पिता और पुत्र के बीच की बातें सुन रहे थे।

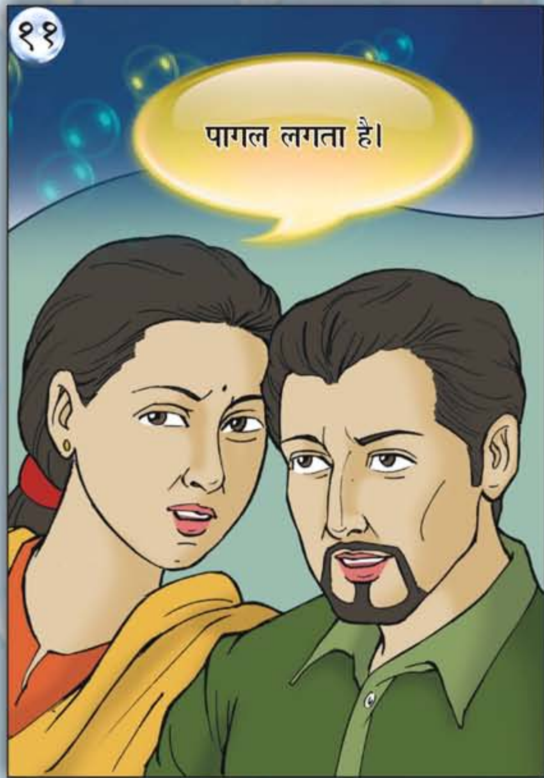
११
पागल लगता है।

८
तभी फिर से युवक ज़ोर से बोला
पापा, इतना ज्यादा पानी।
यह तालाब है बेटा।

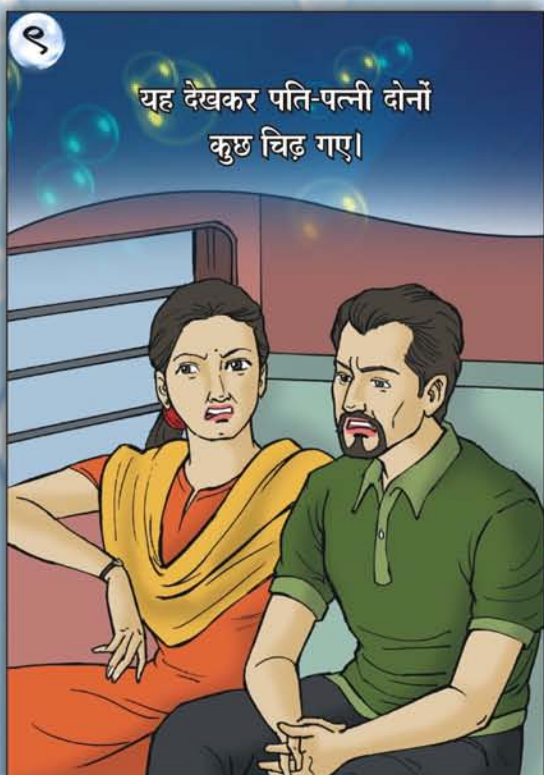
९
यह देखकर पति-पत्नी दोनों कुछ चिढ़ गए।

फूड कोर्नर

ठंडा(बासी) खाने से नुकसान

प्रश्नकर्ता : बासी खाना क्यों नहीं खाना चाहिए, यह हमें समझाइए।

दादाश्री : पचने में भारी होता है और अधिक पुराना हो तो पाचन शक्ति को बिगाड़ देता है। इसलिए जो कुछ भी तीन-चार घंटे पुराना खाएँ वह सभी चीज़ें पाचन शक्ति कम कर देती है। जल्दी पचता नहीं और डेढ़ दिन पुराना खाएँ तब तो वह पाचन शक्ति को बिगाड़ देता है। जैसे कि सुबह बनाई हुई पावभाजी शाम को या दूसरे दिन नहीं खानी चाहिए।

रोगों के कारण

शास्त्रज्ञों ने कहा है कि षडरस भोजन लेना। षडरस मतलब छः रसवाला भोजन। छः रस मतलब तीखा, नमकीन, खट्टा, कसेला, कड़वा और मीठा। सभी रस अनुपात में लेने चाहिए। कोई रस कम और कोई रस ज्यादा लेने से रोग उत्पन्न होते हैं। लोगों का कैसा है कि मीठा हो और थोड़ा तीखा हो तो चलता है, ऐसा कहेंगे।

अधिकतर लोग कौन सा रस नहीं लेते? कड़वा और कसेला रस नहीं लेते। इतना कड़वा खाना ही चाहिए और यदि कड़वा कम लें या नहीं लेते तो उसका फल क्या आता है? शरीर में रोग उत्पन्न हो जाते हैं। फिर दवाई खानी पड़ेगी। कौन सी दवाई?

प्रश्नकर्ता : क्विनाइन।

दादाश्री : हाँ, क्विनाइन। वह कितनी कड़वी लगती है। कोई कहता है कि मुझ से तो कड़वी दवाई पी ही नहीं जाती। लेकिन क्या हो? उसकी कमी हो जाएगी तो लेना ही पड़ेगा न? शरीर में इतना भाग कड़वा जाना ही चाहिए।

बहुत से लोग मीठे पर ही टूट पड़ते हैं और तीखा कम खाते हैं। बहुत से तीखे पर ही टूट पड़ते हैं और खट्टा कम खाते हैं। उसकी मात्रा कम-ज्यादा हो जाने से ये सब रोग होते हैं।

इसलिए हमने क्या कहा है, कि तू नॉर्मेलिटी में रहना। नॉर्मेलिटी में कोई चीज़ नुकसान नहीं करती। नॉर्मेलिटी यानी क्या? षडरस का भोजन। यानी छः रस का भोजन। ये दाल-चावल-सब्जी-रोटी इसमें छः रस आ जाते हैं। छः रस को सही मात्रा में लेना चाहिए। सही मात्रा मतलब तौल के नहीं लेकिन समान। फिर शरीर में तकलीफ नहीं होगी।

षडरस का भोजन

चलो खेलें...

१. दिए गए चित्रों को नाम दो।
वसंत ऋतु, सर्दी, गर्मी, शरद ऋतु, बरसात

A-

B-

C-

D-

E-

२. यहाँ दिए गए प्रत्येक सर्कल का नंबर उसके नीचे दिए गए दो सर्कल के नंबर की कुल संख्या है तो सबसे ऊपरवाले सर्कल में कौन सा नंबर आएगा, यह बताओ।

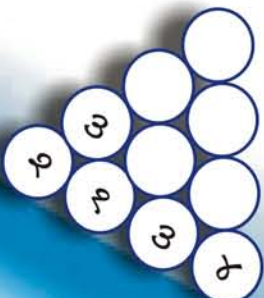

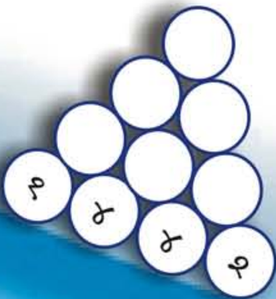

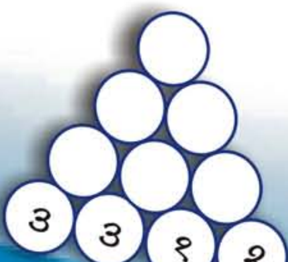

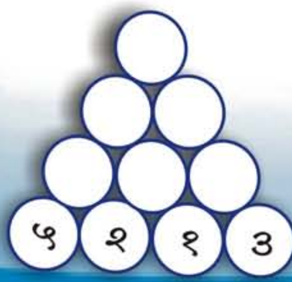

३. दिए गए चित्र में से १० फर्क ढूंढो।

४. नीचे दिए गए चित्र में दूसरें छूपे हुए चित्र ढूंढे।

ऐतिहासिक गौरवगाथा

पुनिया श्रावक सामायिक और आदर्श भक्ति का एक उदाहरण थे। वह एक ऐसे श्रावक थे कि जिनकी धर्म भावना की तारीफ खुद भगवान महावीर ने की थीं। हँसी खुशी गरीबी स्वीकार करनेवाले पुनिया ने अपनी सारी पैत्रिक संपत्ति का दान किया था और खुद रूई की बाती(पुनिया) बनाने से मिलनेवाले लगभग दो आने में संतोष से जीते थे।

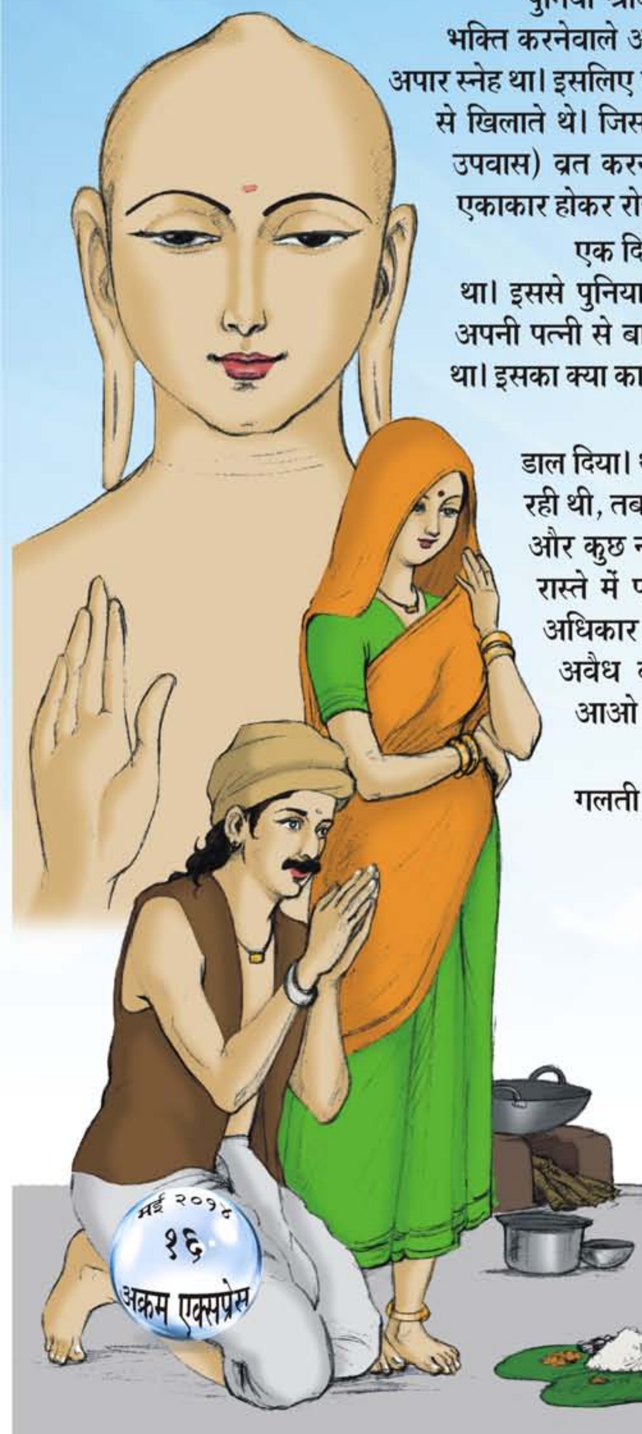

पुनिया श्रावक को प्रभु के प्रति अपार भक्ति थी। इसी तरह प्रभु की भक्ति करनेवाले अन्य श्रावकों (वीतराग प्रभु को माननेवाले) के प्रति भी उन्हें अपार स्नेह था। इसलिए रोज़ पति-पत्नी एक श्रावक को अपने यहाँ निमंत्रण देकर प्रेम से खिलाते थे। जिसके कारण दोनों को एकांतर (एक दिन छोड़कर, दूसरे दिन उपवास) व्रत करना पड़ता था। ऐसे बारह व्रतधारी पुनिया आत्मसमभाव में एकाकार होकर रोज़ एक सामायिक करते थे।

एक दिन सामायिक में पुनिया श्रावक का चित्त स्थिर नहीं रह पा रहा था। इससे पुनिया के अंतर में चंचलता जागी। ऐसा क्यों हो रहा है? उसने अपनी पत्नी से बात की "आज सामायिक में मेरा चित्त स्थिर नहीं रह पा रहा था। इसका क्या कारण हो सकता है। यह मुझे समझ में नहीं आ रहा है।"

आत्मजागृत पुनिया की बात ने उसकी पत्नी को सोच में डाल दिया। थोड़ी देर बाद याद आने पर उसने कहा, "मैं गाँव से वापस आ रही थी, तब रास्ते पर गोबर पड़ा था वह मैं घर ले आई हूँ। इसके अलावा और कुछ नहीं लाई।" पुनिया श्रावक के जागृत आत्मा ने कहा, "अरे, रास्ते में पड़ा गोबर, वह अपना नहीं कहलाता। जिस पर किसी का अधिकार न हो, उस पर राज्य का अधिकार होता है। अपने लिए यह अवैध कहलाएगा। जाओ, गोबर जहाँ था, वहाँ वापस रखकर आओ।"

पुनिया की आत्म जागृति इतनी थी कि एक छोटी सी गलती भी उनके अंतर को अस्थिर कर देती।

एक बार महाराज श्रेणिक ने भगवान महावीर से पूछा, कि "मृत्यु के बाद मेरी कौन सी गति होगी?" तब भगवान महावीर ने बताया, "नर्क गति होगी।" अपने परम भक्त से भी प्रभु सच्ची बात कहने से हिचकते नहीं थे। राजा श्रेणिक ने

इसमें से छूटने का उपाय पूछा तब भगवान ने कहा, "यदि पुनिया श्रावक की सिर्फ एक सामायिक का पुण्य मिल जाए तो तुम्हारी नर्क गति टल जाएगी।"

नर्कगति टलने का उपाय मिलते ही राजा खुश हो गए। किसी से कुछ भी खरीदना राजा के लिए कौन सी बड़ी बात थी। और वह भी पुनिया जैसे दीन से। राजा तो पुनिया श्रावक की सामायिक खरीदने गए।

बात सुनकर पुनिया ने राजा से कहा, "मेरी सामायिक का मूल्य तो भगवान ही बता सकते हैं। मुझे क्या समझ में आए? इसलिए आप कृपा करके उनसे ही पूछ आएँ।"

श्रेणिक भगवान के पास वापस गए। विनयपूर्वक सारी बात कही और पूछा, "प्रभु आप ही बताइए कि पुनिया की सामायिक की मैं क्या कीमत दूँ ताकि मेरी नर्क गति टल जाए?"

भगवान ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "पुनिया की सामायिक का मूल्य देना असंभव है। हे राजन! तुम्हारा पूरा राज्य तो सिर्फ उसकी दलाली(कमीशन) में ही चला जाएगा। एक पूरी सामायिक की कीमत तो इससे अनेक गुना अधिक है।"

राजा तो यह सुनते ही रह गए, "क्या? इतनी उच्च सामायिक कि मेरा पूरा राजपाट दलाली में ही चला जाएगा?"

राजा निराश हो गए, लेकिन साथ ही साथ सच्चे श्रावक पुनिया की धर्मभावना को मन ही मन वंदन कर रहे थे।

प्रभु महावीर के स्वमुख से जिसकी तारीफ हुई हो, उन पुनिया श्रावक को धन्य है।

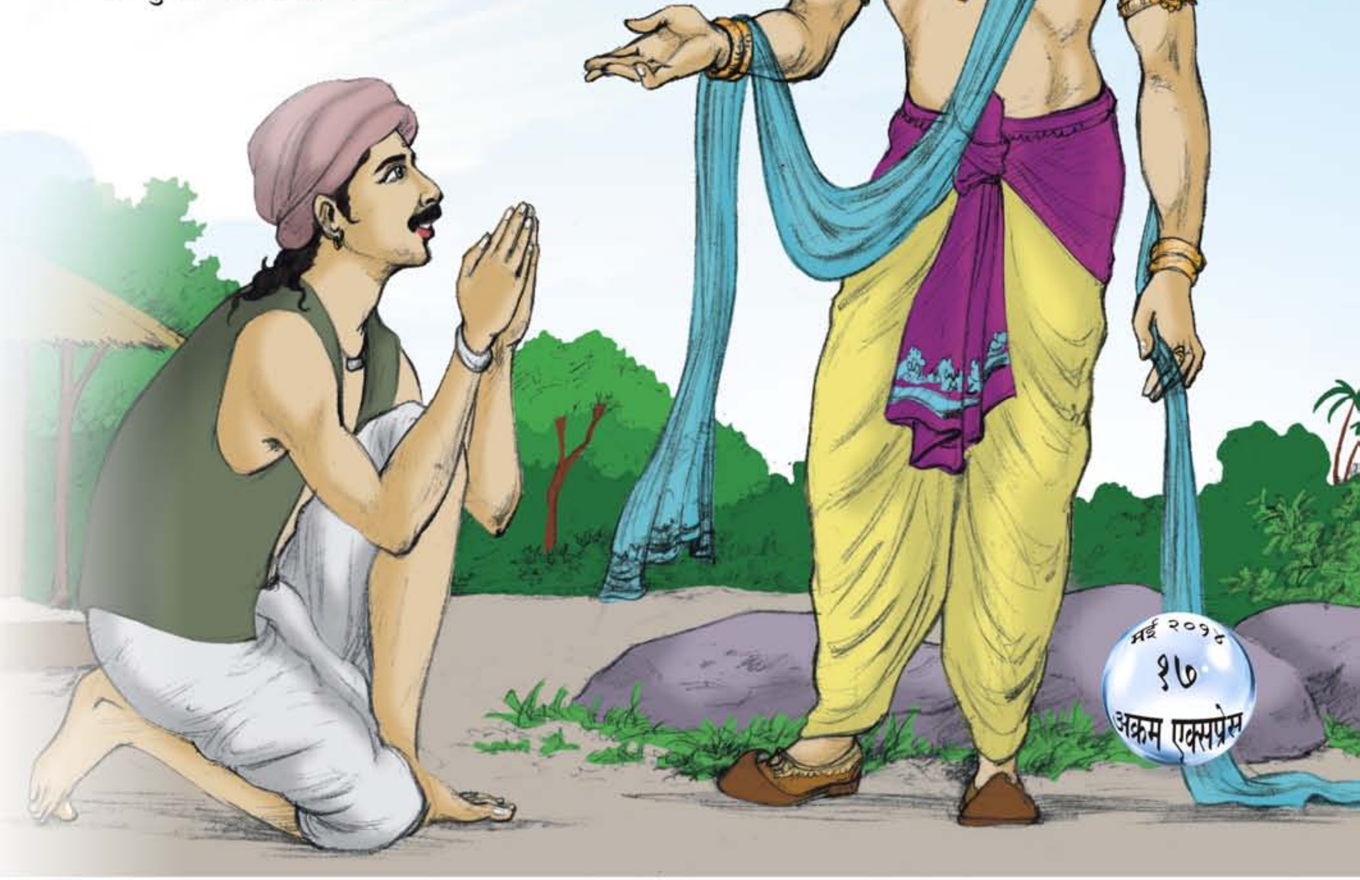

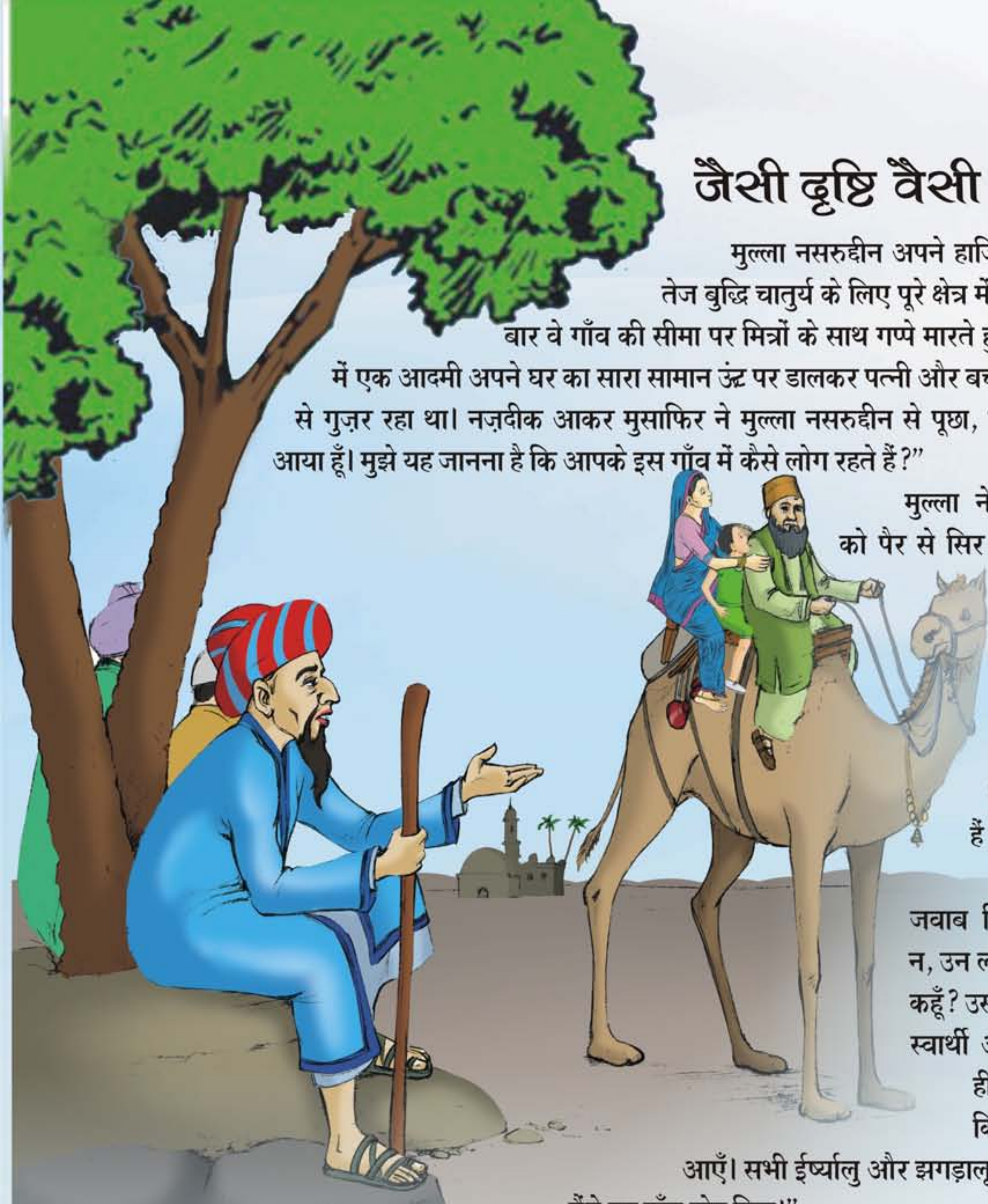

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

मुल्ला नसरुद्दीन अपने हाज़िर जवाबी और तेज बुद्धि चातुर्य के लिए पूरे क्षेत्र में मशहूर थे। एक बार वे गाँव की सीमा पर मित्रों के साथ गप्पे मारते हुए बैठे थे। इतने में एक आदमी अपने घर का सारा सामान ऊंट पर डालकर पत्नी और बच्चों के साथ वहाँ से गुज़र रहा था। नज़दीक आकर मुसाफिर ने मुल्ला नसरुद्दीन से पूछा, "भाई, मैं दूर से आया हूँ। मुझे यह जानना है कि आपके इस गाँव में कैसे लोग रहते हैं?"

मुल्ला ने उस मुसाफिर को पैर से सिर तक एक नज़र घुमाकर देखा और फिर पूछा, "तुम जहाँ से आ रहे हो, वहाँ कैसे लोग रहते हैं?"

मुसाफिर ने जवाब दिया, "जाने दो न, उन लोगों की तो क्या कहूँ? उस गाँव में तो सब स्वार्थी और लुच्चे लोग ही रहते थे। कभी किसी के काम न आएँ। सभी ईर्ष्यालु और झगड़ालू थे। इसी कारण मैंने वह गाँव छोड़ दिया।"

मुल्ला ने जवाब दिया, "भाई, यहाँ भी सब लुच्चे और स्वार्थी लोग ही रहते हैं। कभी किसी की प्रगति न देख सकें ऐसे ईर्ष्यालुओं का है यह गाँव।"

यह सुनकर मुसाफिर दूसरे गाँव जाने के लिए चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद वहाँ दूसरा एक मुसाफिर आता हुआ दिखा। उसने भी घर का सब सामान ऊँट पर लादा हुआ था। नज़दीक आकर उसने मुल्ला से पूछा, "भाई मैं दूर से आया हूँ। मुझे आपके गाँव में बसना है। मुझे बताएँगे कि इस गाँव में कैसे लोग रहते हैं?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने उसे भी वही सवाल पूछा, तुम अभी जिस गाँव से आ रहे हो, वहाँ के लोग कैसे थे?"

मुसाफिर ने एक गहरी आह भरते हुए कहा, "उस गाँव के लोगों की तो क्या बात करूँ? सभी भले और मिलनसार लोगों का वह गाँव था। हमेशा दूसरे के दुःख में मदद करने के लिए दौड़ पड़ते थे। ऐसा अच्छा गाँव छोड़ने का मुझे बहुत दुःख है। मेरी नौकरी की बदली इस गाँव में हुई है इसलिए मैं यहाँ आया हूँ।"

मुल्ला ने कहा, "भाई, यहाँ भी सभी मिलनसार और भले लोग ही रहते हैं। दूसरों के दुःख में दुःखी और दूसरों के सुख में सुखी। आप खुशी से इस गाँव में रहने आ जाइए। आपको कोई मुश्किल नहीं आएगी।"

मुसाफिर खुशी-खुशी गाँव में दाखिल हुआ।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि

iSTAR

Venue: Simandhar City
Age: 13 – 21 years
Date: August 4-17, 2014

For **NRI Teenagers and Youth.**

Understand Akram Vignan | Interactive Activities | Religious Tours | Group Discussions | Self Development Programs, Games & Videos | Satsang Sessions with AptPutra brothers and AptPutri sisters | much more...

For further details, visit **http://istar.dadabhagwan.org**

पज़ल के जवाब

३

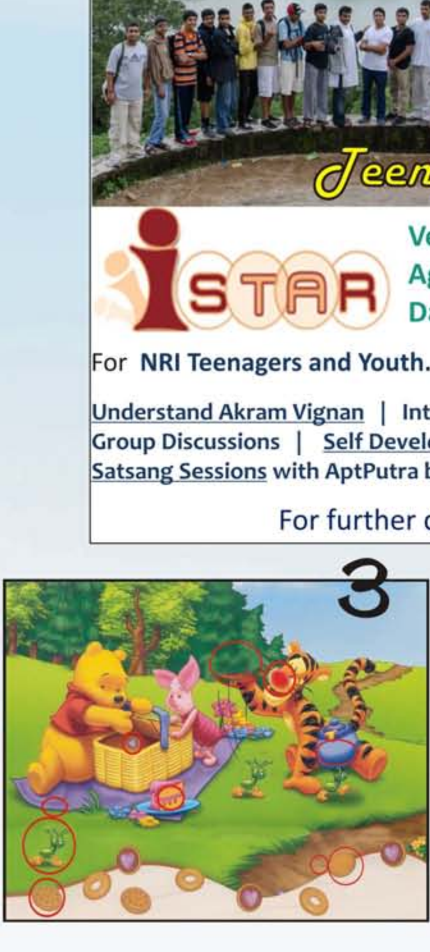

१

A-सर्दी, B- वसंत ऋतु, C- गर्मी
D- बरसात, E- शरद ऋतु

२

Akram Express

May 2014
Year : 2, Issue : 2
Conti. Issue No.:14

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/14-16
valid up To 31-12-2016
Posted at Adalaj Post office
on 8th of every month

लंदन GNC Day की एक झलक

जर्मन भाषा में बालविज्ञान प्रस्तुत अक्रम डाइजेस्ट भाग-१ का पूज्यश्री द्वारा ओपनिंग

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद **##** हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर **SMS** करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.**, २.पूरा एड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगज़िन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Printer, Publisher and Owner - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation, Editor - Dimple Mehta, Printing Press **Amba offset:-** Parshwanath Chembers, Usmanpura, Ahmedabad-14 and published at Mahavideh Foundation, Simandhar City, Adalaj-382421.Dist-Gandhinagar.